ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 88-90**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

आजादी क्यों एक व्यंग्यार्थ आलोचनात्मक यथार्थ विवेचन

राणा प्रताप भारती, 2. डॉ0 नित्यानंद श्रीवास्तव

शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग– दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-23.09.2025, Revised-01.10.2025, Accepted-08.10.2025 **E-mail : ranabharati1988@gmail.com**

सारांशः ***यह लघुता कथाकथित या व्यंग्यपारक और वास्तविक जहां तक वह उपेक्षित और दलित, स्त्री, निम्न,वर्ग, शोषित वर्ग, मानवता मार्क्सवाद, सामाजिक युगबोध, का यथार्थ के प्रति हमारी एकता और सद्भावना की घोतक हो वही तक ग्राह्य है, उससे अधिक नहीं अन्यथा यह भ्रम हो जाने की संभावना है कि हम मानव व्यक्तित्व को बोलता है, अनिवार्यता लघु मानते हैं ।***

स्वर्गीय सुधा बिंदु त्रिपाठी का यह प्रथम और अंतिम प्रकाशित कृति है, जिसके संबंध में अपनी डायरी में अंकित किया है, शिब्बन लाल ज़ी का मजदूर मिल का संग्राम चल रहा था, एक दिन उन्होंने चेक लिख कर मुझे दिया और जब हम बैंक पहुंचे, तो बैंक के बाबू ने चेक वापस कर दिया और कहां उनके खाते में अब रुपया नहीं है, जिस समय हमने सक्सेना जी को यह समाचार दिया, तो वह मुख हो गए। युद्ध कैसे चले यह समस्या थी। कपिल देव जी प्रधान थे, बोले– अब क्या होगा ? आजादी के बाद भी अनेक त्रासदियां रही, जो तुलसीराम – मुर्दहिया –स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व तेज बहादुर सिंह नामक एक प्रख्यात कम्युनिस्ट नेता ने किया था। उन्होंने बरसों तक भूमिगत रहकर काम किया था। इस पूरे क्षेत्र पर उनका विशेष प्रभाव था। इन बहन मंडलों में से सामाजिक कुरीतियों पर लोक शैली में तरह–तरह के व्यंग द्वारा प्रस्तुति को बहुत ही मार्मिक बना देते हैं।

कुंजीभूत शब्द– निम्न वर्ग, शोषित वर्ग, मार्क्सवाद सामाजिक युगबोध के यथार्थ ।

उनका यह गीत मुझे आज भी स्मरण होते हैं, रोमांचित कर देता है, जिनकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं,

हरिजन जात सहै दुख भारी हो।
हरिजन जाति सहै दुख भारी।।
जेकर खेतवा दिन भर जोतली
ऊहै देला गारी हो दुख भारी।
हरिजन जाति सहै दुख भारी

इसी कृतियों पर एक विरहा शैली में बड़ा ही लोकप्रिय गीत गाया जाता है, जिसकी इस प्रस्तावना– 'आजादी क्यों ?' त्रिपाठी जी ने इस संग्राम के बीच आजादी क्यों की रचना लिखी, गोरखपुर से बभनान चीनी मिल पर सभा करने जा रहा था। हाथ में नोटिस के बंडल हमारे सामने थे। उसी पर गोरखपुर से बभनान के बीच हमने आजादी क्यों की रचना कर डाली।

कविता सामाजिक थी, भदेश्वर तथा देवनारायण को पूरी कविता याद हो गई थी, उसके छपने–छापाने का प्रश्न था। लोग उत्सुक थे। इसी बीच गोपालगंज बिहार में अखिल भारतीय क्रांतिकारी पार्टी की बैठक हुई हम लोग भी पहुंचे भारत के ऊंची चोटी के पुराने क्रांतिकारी पहुंचे हुए थे। मुझको प्रथम बार वहां पर आजादी क्यों ? पढ़ने का अवसर मिला। सब लोग सुनकर आश्चर्य चकित हो गए और इसके प्रकाशन की बात आई और इस ह्रदय को झकझोर देने वाली रचना को झारखंडी राय जी किताब की भूमिका लिखने के लिए ले लिया आतुर हो उठें, तत्पश्चात वे जेल चले गए। वे भूमिका नहीं लिख सके, उन्होंने त्रिपाठी जी के पास उन्होंने पुस्तक वापस भेज दी।

झारखंडी राय जी भूमिका क्यों लिखना चाहते थे। उसे स्पष्ट कर दूं, पुस्तक में चार पंक्तियां हैं,

आशा है उनको इनसे
जो हैं लालच के पुतले
इस समाजवाद के शिक्षक
यह साम्यवाद के चेले।।

इससे हमारी देश और पार्टी की बदनामी होगी, लेकिन जब मैं इस बनावटी नेताओं की बात समझाई, तो वे लोग मान गए इसी, से प्रभावित होकर राय बाबू ने स्वयं ही पुस्तक की भूमिका लिखने की बात कही थी लेकिन संयोग वह नहीं हो सके और पुस्तक हमारे पास वापस आ गयी।

दुःख का क्रन्दन– शारदा की कम उम्र में चलें जाना, एक पिता कों लालाचर पिता व्यक्त करतीं हैं, त्रिपाठी,

दुःख पर दुःख है हम ढोते,
देख न सकता है कोई,
मानव का कैसा जीव
विपदा है किसकी रोयी,।।

"सुर्य कान्त त्रिपाठी निराला और सुधा बिंदु त्रिपाठी" की एक समान दुःख कों प्रकट करता है,

धन्ये मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।।

निराला अपनी पुत्री सरोज को 'धन्या' कहकर संबोधित करते थे, जब 19 वर्षीय सरोज दुनिया में नहीं, वे (निराला) उसे जीवन में सुख, वैभव, या सहारा देने में असफल पाते हैं। वे खुद को ग्लानि महसूस करते हैं कहते हैं, मैं कर्तव्य–पालन में अक्षम हूं, जो एक पिता अपनी बेटी के लिए करता है। मै न कर सका, यह एक दुखद रचना है, परंतु समाज पर व्यंग कहा जा सकता है। शोषण– शोषक वर्ग पर त्रिपाठी जी एवं निराला ने दोनों ने लिखा, सुधा बिंदु त्रिपाठी जी ये पंक्तियां–

किसकी हरियाली खेती,
काटा किसने करकें छल,

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

है बीच ईख के किसके ,
बेचा किसने देकर बल,
मुख से छीना है किसने
जलते चूल्हे की रोटी
सम्बल पर किसके किसने,
कर दी किस्मत कों खोटी।।

आजादी के बाद भी जमीदारों, पूंजीवादी ताकतो ने छोटे–छोटे वर्गों पर अत्याचार जबरन उसकी पूंजी अपनी पूंजी बना लेना। उसकी निवाला को छीन लेना और मजदूर और मजबुर, लाचारी व्यक्ति को अपनी किस्मत पर रोने के लिए मजबूर कर देना क्या यह आजादी है, क्या हम लोगों ने इसीलिए देश को स्वतंत्र कराया कि यह दिन देखना पड़े, इससे अच्छा तो वही अच्छा होता उनके हालात पर छोड़ देना।

सुधा बिंदु ग्रंथावली, पृष्ठ संख्या 390–391।।

निराला की यह पंक्ति
अब सुन बे गुलाब
भूल मत जो पायी खुशबू रंग–ओ–आबा
खून चूसा खाद का तूने, अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट,
कितनों कों तुने बनाया है गुलाम
माली कर रक्खा सहाया जाड़ा –धाम

–यह पंक्ति सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (जो शोषित वर्ग का प्रतीक है) गुलाब (पूंजीपति वर्ग का प्रतीक) को संबोधित करते हुए पूंजीवादी व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करता है।

शोध विस्तार– जब कोई व्यक्ति शोषित वर्ग से शोषण का शिकार होता है, तो वह अपने आप को अपने जीवन को कोसता है, कहता है कि मेरा जीवन किसी काम का नहीं जहां भी जाओ परेशानियां ही दिखाई पड़ती हैं, अब मैं कहां जाऊं रोशन कुमार की यह पंक्ति बैठी है:

मेरा जीवन कुछ काम न आया,
जैसे सुखे पेड़ की छाया
यह देख वहां जा बैठा,
जो दिखतीं घनघोर छाया,
पर वह भी कांटों की छाया,
यह देख फूलों की बगियां जाया
वहां भी किड़े ही पाया

हताश, निराश, होकर जब व्यक्ति के जीवन में हर तरफ़ अंधकार, सा लगने लगता है, जो साथी, सहयोगी अच्छे, दिखते समय आने पर सब बदल से जाते हैं, (रोशन कुमार की कलम से, दैनिक जागरण 2009)।

भारतीय स्वतंत्रता मिलने पर भी अपने मानवीय चीजों को व्यक्ति नहीं स्थापित कर सका, जो बलशाली, धनबली, राजशाही, पूंजीवादी, महाजनों आदि सभी ने गरीब जनता को उसके हक अधिकार को जबरन खा जाना दु:खद, था।

आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोग न्याय तन्त्र कों धोखा देकर इज्जत, से घूमने लगे, शरीफ एवं ईमानदार लोग ऊंची पहुंच न होने के कारण, बंधुआ मजदूर बन गये।

मृणाल पांडे का साहित्य में युगबोध उषा रानी 292 पृष्ठ संख्या।।

सुधा बिंदु त्रिपाठी के पत्र– सोचता हूं, आदमी कब सुखी होगा ? उत्तर मिलता है– उसकी आवश्यकता है, जितनी ही कम होगी। वह सुखी रहेगा। यह बेटियों का विवाह उनकी शिक्षा लड़के वालों की मांग इस समस्या को जटिल बना दिए हैं। इसलिए मैंने लोगों को बताया, शादी–विवाह के लिए दो रोटी और दो धोती पर्याप्त हैं ! लेकिन मेरी सुनता कौन है ? सुनाने लायक नहीं रहा रह गया हूं। फिर भी लोग पीछे पड़ जाते हैं, चलकर यह विवाह तय कर दीजिए, ऊंची शिक्षा दिया है, उसे ऊंची शिक्षा का लड़का होना चाहिए आज आदमी–आदमी नहीं रह गया, लालच का पुतला हो गया है। वह चाहता है, क्या पांऊ क्या रख लूं भाई सीताराम जी का भजन देखता हूं। आश्चर्य में डूबने लगता हूं, लड़की शिक्षा और लड़का आवश्यकताओं पर आवश्यकताए है, फैशन, प्रोफेशन दोनों ने हमारी स्वतंत्रता को बंधन में डाल रखा है। जहां तक हम सोच पाते हैं और अपने आप को घुटन कर जाते हैं। प्रेम करने के लिए चाहिए यह हम कहां जान पाते हैं? भूखे भजन न हों भुआला। इनके दो पाटों में मनुष्य तरह–तरस कर घुट–घुट कर रह जाता है, वह भला किसी का प्रेम और पेट की ज्वाला यानी भूख! जब भूखा रहेगा मनुष्य, फिर प्रेम किससे और कहां कर सकेगा, तिल मिलाकर रह जाता हूं। **(डायरी से 17/07/1982)**

सुधा बिंदु त्रिपाठी और बाबू कैलाश नाथ पत्र (1970)– कागज पर लिखते लोगों को देखा होगा कागज को खाते लोगों को नहीं,

मैं आज उन्हीं में से हूं,
न लड़कपन समझ
न जवानी
आज अपने 53 वर्ष को क्या समझूं
लड़कपन या जवानी साहब यह प्रश्न उठता है, मेरा। गद्य खंड पृष्ठ संख्या 272.

शोध पद्धति– आंचलिक एवं क्षेत्रीय भौगोलिक के आधार पर किया गया शोध पत्र है, जो इस पत्र में जो सस्पष्ट दिखाई देता है। यह पूर्णतया मौलिक वास्तविक यथार्थ आदि को चित्रित करता है। (गुणात्मक/मात्रात्मक), नमूनाकरण और विश्लेषण की तकनीकें शामिल होती हैं, जो शोध के उद्देश्यों को पूरा करती हैं और इस शोध–पत्र सुनिश्चित करती हैं। "गद्य खंड पृष्ठ संख्या –224 नमन प्रकाशन नई दिल्ली "2013.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

निष्कर्ष–इस पत्र में सुधाबिंद त्रिपाठी के उन साहसी निर्भीक कहे जाने वाले क्रांतिकारी व लेखक जो भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद जो देश में पूंजीवादी ताकते जमीदारों आदि जो गरीबों दलितों पर अत्याचार कर रहे हैं, उसे देखकर यह रचना स्वर्गीय सुधा बिंदु त्रिपाठी ने किया, वह कहते हैं, क्या बाबा गांधी ने,और हम सब एवं अन्य साथी जो अपने प्राणों की आहुति दे चुके हैं, इसीलिए वह देश की आजादी कराई। फिर तो आजादी क्यों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुधा बिंदु त्रिपाठी ग्रंथावली काव्य खंड पृष्ठ संख्या– 390–391, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. विशाल पांडे का साहित्य में युगबोध–संजय प्रकाशन, नई दिल्ली (उषा रानी), पृष्ठ संख्या 292.
3. गद्य खंड पृष्ठ संख्या– 224 नमन प्रकाशन, नई दिल्ली 2013.
4. सुधा संस्मृति–अंक 11, गोरखपुर प्रकाशन।
5. आचार्य रामचन्द्र तिवारी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश।
6. जैसा मैंने देखा–शीतलसुयश प्रकाशन, राप्ती (रेती) चौक, गोरखपुर, पृष्ट संख्या 9.
7. सुधाविन्दु ग्रंथावली, भाग 3 (गद्य खण्ड) 222.
8. वहीं पृष्ठ, संख्या 222.
9. वहीं पृष्ठ, संख्या 223.
10. वहीं पृष्ठ, संख्या 224.

*****